Dr. Madan Paswan, History | Lecture No. (26)

Class: B.A. Part-1 (H.P. 1st | Date: 24.11.2020

Topic: सिंधु क्षेत्रों के बाहर की संस्कृतियाँ

दूसरी सहस्त्राब्दी ईसा पूर्व तक सिंधु क्षेत्रों के बाहर भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियाँ उद्भूत हुईं, जो न तो बाहरी थीं और न ही हड़प्पा संस्कृति की तरह थीं, बल्कि पत्थर एवं ताँबे के औजारों का इस्तेमाल इन संस्कृतियों की अपनी विशिष्टता थी। अतः यह संस्कृतियाँ ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों के नाम से जानी जाती हैं।

ताम्र पाषाण संस्कृतियाँ अपनी भौगोलिक स्थितियों के आधार पर पहचानी जाती हैं। इस प्रकार हम इन्हें निम्नलिखित रूप में वर्गीकृत करते हैं :-

(क) राजस्थान में बनास संस्कृति,
(ख) कायथा संस्कृति,
(ग) मालवा संस्कृति,
(घ) महाराष्ट्र की जोर्वे संस्कृति।

जहाँ पर गेरूए चित्रित बर्तन, काले एवं लाल मृद्भांड, चित्रित धूसर मृद्भांड आदि संस्कृतियों का वर्णन आवश्यक है। यह संस्कृतियाँ बर्तनों की विशिष्ट किस्मों के आधार पर निर्धारित की जाती हैं। गंगा-यमुना दोआब में सौ से अधिक स्थानों पर विशिष्ट प्रकार के बर्तन प्राप्त हुए हैं, जिन्हें गेरूए चित्रित बर्तनों (OCP) की संस्कृति से सम्बद्ध माना जाता है।

गैरिक भांड एक लाल अनुलेपित मृद्भांड है, जिसमें बहुत से मृद्भांड कलश दिखाई देते हैं। गेरूए चित्रित बर्तनों की संस्कृति के बाद काले एवं लाल मृद्भांडों की संस्कृतियाँ तथा चित्रित धूसर मृद्भांडों की संस्कृतियाँ क्रमशः आती हैं। उत्तर भारत में हरियाणा तथा ऊपरी गंगा घाटी में चित्रित धूसर मृद्भांड के स्थलों की बड़ी संख्या मिलती है।

लोहे का प्रादुर्भाव सर्वप्रथम चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति में होता है, जो कि उत्तरी काले पॉलिश किए मृद्भांडों की संस्कृति के नाम से जानी जाती है।

(1) गेरूए चित्रित बर्तनों की संस्कृति : यह संस्कृति मुख्यतः पश्चिमी उत्तर प्रदेश के नदियों के तटों पर विस्तृत थी। मालपुर (सहारनपुर) से लेकर साई पई (इटावा) तक लगभग 110 स्थलों पर इस विशिष्ट संस्कृति प्राप्त हुए हैं। इसके क्षेत्र आकार में छोटे हैं।

Continue On Lecture no. 27...